

पाठ 9 नवंबर 28,
2026 के लिए

हिंदी अनुवादक:
पादरी विजय पाल सिंह

भविष्यद्वक्ताओं को परखना



"हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो, वरन् आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं; क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं।"

(1 यूहन्ना 4:1)

परमेश्वर ने हमेशा अपने लोगों को सही मार्ग पर चलने के लिए मार्गदर्शन देने हेतु भविष्यद्वक्ता नियुक्त किए हैं। हालाँकि, भविष्यद्वक्ता होने का दावा करने वाले सभी लोग परमेश्वर द्वारा नहीं भेजे गए हैं।

यहाँ तक कि कुछ सच्चे भविष्यद्वक्ता भी धन के लालच में अपने उद्देश्य से भटक गए और झूठे भविष्यद्वक्ता बन गए। ऐसा ही शेमायाह के साथ हुआ, जिसने नहेम्याह से पाप करवाने के प्रयास में रिश्वत स्वीकार की (नहेम्याह 6:10-13)।

हम सच्चे और झूठे भविष्यद्वक्ताओं में अंतर कैसे कर सकते हैं? बाइबल हमें उनमें भेद करने के लिए क्या मार्गदर्शन देती है?





- अलौकिक घटनाएँ
- बाइबल के साथ सामंजस्य
- मसीह की महिमा करना
- सकारात्मक प्रभाव
- भविष्यवाणियों का पूरा होना

अलौकिक घटनाएँ

"इसलिये प्रभु का दास, अपने प्रभु के साथ कैसे बातें कर सके? क्योंकि मेरी देह में न तो कुछ बल रहा, और न कुछ साँस ही रह गई!" (दानिय्येल 10:17)



भविष्यवाणी की सेवकाई के साथ अक्सर अलौकिक घटनाएँ होती हैं, चाहे वे बाहरी (चिह्नों के रूप में) हों या स्वयं भविष्यद्वक्ता में प्रकट हों।

बाहरी अलौकिक घटनाएँ



एलिय्याह ने अविश्वासियों को भस्म करने के लिए स्वर्ग से आग बुलाकर अपनी भविष्यद्वाणी की सेवकाई को प्रमाणित किया (2 राजा 1:10)।



एक अज्ञात भविष्यद्वक्ता के वचन पर बेतेल की मूर्तिपूजक वेदी नष्ट हो गई (1 राजा 13:5)।

भविष्यद्वक्ता में अलौकिक घटनाएँ



एक दर्शन के दौरान दानिय्येल निर्बल हो गया और उसकी साँस फूलने लगी (दानिय्येल 10:17)।



प्रेरित यूहन्ना दर्शन प्राप्त करने पर मृतक के समान भूमि पर गिर पड़ा (प्रकाशितवाक्य 1:17)।

ये अलौकिक घटनाएँ अपने आप में किसी भविष्यद्वक्ता को सच्चा प्रमाणित नहीं करतीं। झूठे भविष्यद्वक्ता भी शत्रु की शक्ति के द्वारा अलौकिक चिह्न दिखा सकते हैं (प्रकाशितवाक्य 13:13)।

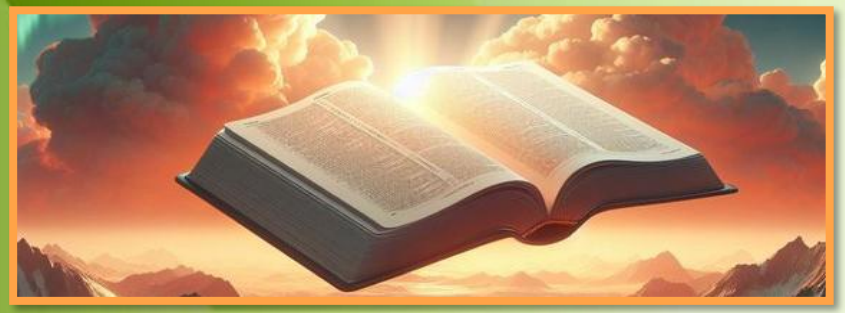

बाइबल के साथ सामंजस्य

"व्यवस्था और चितौनी ही की चर्चा किया करो! यदि वे इस वचन के अनुसार न बोलें, तो इसका कारण यह है कि उनमें प्रकाश नहीं है।" (यशायाह 8:20)



यशायाह 8:20 एक भविष्यद्वक्ता की सच्चाई को परखने के लिए स्पष्ट मापदंड प्रस्तुत करता है: उसकी शिक्षा व्यवस्था अर्थात् मूसा की लिखी पाँच पुस्तकों के अनुसार और चितौनी अर्थात् बाद के भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा दिए गए प्रकाशनों के अनुसार होनी चाहिए।

परमेश्वर ने अपने लोगों की संदेशों को समझने की क्षमता के अनुसार भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से अपना ज्ञान प्रकट किया है। इसे "क्रमिक सत्य" कहा जाता है।

इस प्रकार, प्रत्येक युग में उसका अपना "वर्तमान सत्य" रहा है (2 पतरस 1:12)। लेकिन, क्योंकि इस सत्य को प्रकट करने वाला परमेश्वर ही है—और वह बदलता नहीं है (याकूब 1:17)—इसलिए प्रत्येक नया प्रकाशन पहले दिए गए प्रकाशनों के अनुरूप होता है (यिर्मयाह 28:8)।

इसी कारण, जिस किसी भविष्यद्वक्ता का संदेश बाइबल की शिक्षाओं के विरुद्ध जाता है, वह झूठा भविष्यद्वक्ता है (व्यवस्थाविवरण 13:1-3)।



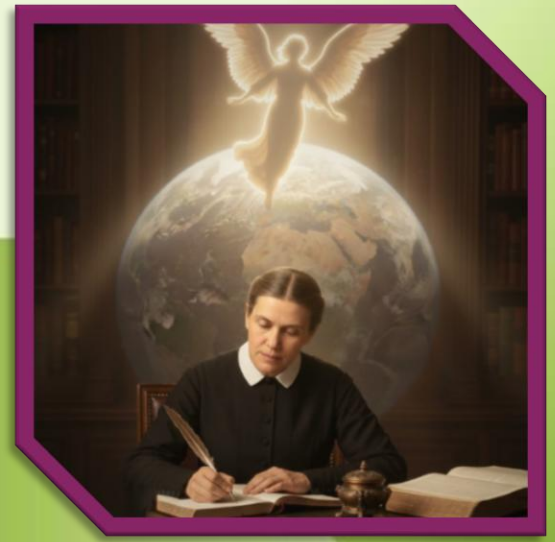

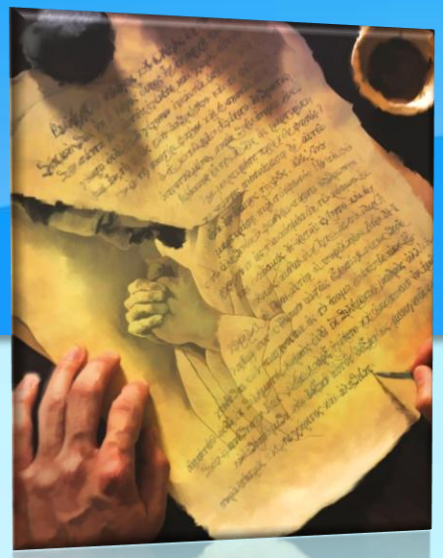

मसीह की महिमा करना

"और जो आत्मा यीशु को नहीं मानती, वह परमेश्वर की ओर से नहीं; और वही तो मसीह के विरोधी की आत्मा है, जिसकी चर्चा तुम सुन चुके हो कि वह आनेवाला है, और अब भी जगत में है।" (1 यूहन्ना 4:3)

जो भविष्यद्वक्ता यीशु के ऐतिहासिक अस्तित्व को नकारता है, या उसे अपने संदेश का केंद्र नहीं बनाता, वह झूठा भविष्यद्वक्ता है (1 यूहन्ना 4:3)।

इसके अनुरूप, सच्चा भविष्यद्वक्ता यीशु से संबंधित इन सच्चाइयों को स्वीकार करता है:



उसका ईश्वरत्व



उसका देहधारण

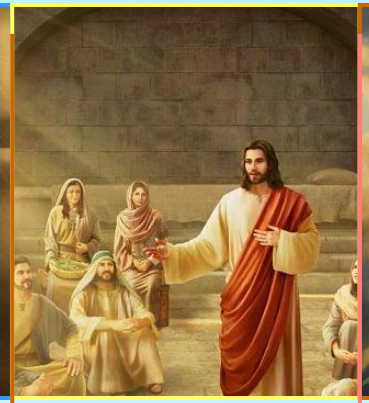

उसका निष्पाप जीवन

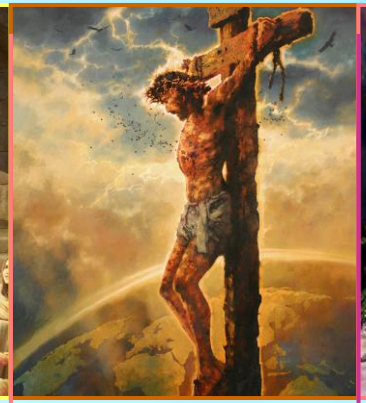

उसकी प्रायश्चितकारी मृत्यु

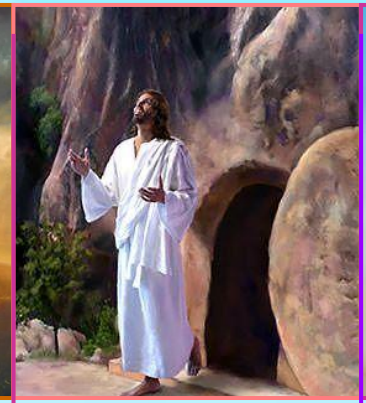

उसका पुनरुत्थान



उसकी मध्यस्थता की सेवकाई



उसका दूसरा आगमन

जो भविष्यद्वक्ता यीशु को ऊँचा उठाते हैं, वे अपना अलग अनुयायी समूह बनाने या स्वयं का प्रचार करने का प्रयास नहीं करेंगे (प्रेरितों 4:12)। वे उन लोगों का लाभ उठाने के बजाय उनकी सेवा करने के लिए तैयार रहेंगे, जिनके पास उन्हें भेजा गया है (मरकुस 9:35; यूहन्ना 13:16)।

सकारात्मक प्रभाव

"झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो, जो भेड़ों के भेस में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु अन्तर में वे फाड़नेवाले भेड़िए हैं। उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। क्या लोग झाड़ियों से अंगूर, या ऊँटकटारों से अंजीर तोड़ते हैं?" (मत्ती 7:15-16)



यीशु के अनुसार, भविष्यवक्ताओं की पहचान उनके फलों से की जा सकती है (मत्ती 7:15-16)। ये फल दो प्रकार के होते हैं, और दोनों का अच्छा होना आवश्यक है।



सन्देश का फल

सच्चे भविष्यवक्ता का सन्देश आत्मिक उन्नति करता है, सांत्वना देता है और पश्चात्ताप करने के लिए बुलाता है (1 कुरिन्थियों 14:3)।

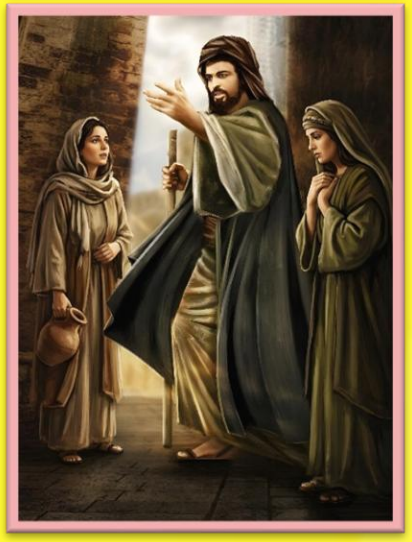

सन्देशवाहक का फल

भविष्यवक्ता का जीवन सही शिक्षा के अनुरूप होना चाहिए। उदाहरण के लिए, उसका जीवन दस आज्ञाओं में से किसी भी आज्ञा के स्पष्ट रूप से विरुद्ध नहीं होना चाहिए (यहूदा 1:16)।









त्रुटि कर सकने वाले मनुष्यों के रूप में, भविष्यवक्ता भी गलतियाँ कर सकते थे और पाप कर सकते थे: योना परमेश्वर से दूर भाग गया; पौलुस ने यूहन्ना मरकुस के बारे में गलत निर्णय लिया; पतरस ने यह दिखावा किया कि वह यहूदी रीति के अनुसार जीवन जीता है। लेकिन ऐसा उनका जीवन जीने का सामान्य तरीका नहीं था।

भविष्यवाणियों का पूरा होना

"परन्तु जो भविष्यद्वक्ता कुशल के विषय भविष्यद्वाणी करे, तो जब उसका वचन पूरा हो, तब ही उस भविष्यद्वक्ता के विषय यह निश्चय हो जाएगा कि यह सचमुच यहोवा का भेजा हुआ है।" (यिर्मयाह 28:9)





भविष्यवक्ता की भूमिका भविष्य में होने वाली घटनाओं की घोषणा करने (भविष्यवाणियाँ करने) से जुड़ी होती है। इसलिए, भविष्यवक्ताओं को पहचानने के लिए एक सरल सूत्र निकाला जा सकता है: यदि भविष्यवाणी पूरी होती है, तो भविष्यवक्ता सच्चा है (यिर्मयाह 28:9); यदि भविष्यवाणी पूरी नहीं होती, तो भविष्यवक्ता झूठा है (व्यवस्थाविवरण 18:22)।

हालाँकि, इस सूत्र के कुछ अपवाद हैं, जिन्हें हमें सही ढंग से समझना चाहिए।

यदि निकट भविष्य में किसी अच्छी बात की घोषणा की जाती है, तो उसका पूरा होना हमेशा आवश्यक है (यिर्मयाह 28:1-4, 15-17)।



यदि दूर भविष्य में किसी अच्छी बात की घोषणा की जाती है, तो हो सकता है कि वह पूरी न हो, क्योंकि वह कुछ शर्तों पर निर्भर होती है। (जैसे, इस्राएल के भविष्य में खुशहाली के बारे में यशायाह की भविष्यवाणियाँ, जो इस शर्त पर थीं कि वह मसीहा को स्वीकार करे।)



बुराई या विपत्ति की भविष्यवाणी करने वाली भविष्यवाणियाँ हमेशा शर्तों पर निर्भर होती हैं। यदि लोग पश्चात्ताप करते हैं, तो उनका भाग्य बदल जाता है (जैसा योना के प्रचार के बाद नीनवे के साथ हुआ)।



“पवित्र आत्मा इसलिए नहीं दिया गया था—और न ही उसे कभी इस उद्देश्य से दिया जा सकता है—कि वह बाइबल का स्थान ले ले; क्योंकि पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से बताता है कि परमेश्वर का वचन ही वह मानदंड है, जिसके द्वारा सभी शिक्षाओं और अनुभवों को परखा जाना चाहिए।”

ई जी व्हाइट (महान संघर्ष, पृष्ठ 7)

“शैतान का सबसे अंतिम धोखा परमेश्वर के आत्मा की गवाही को निष्प्रभावी करना होगा। ‘जहाँ दर्शन की बात नहीं होती, वहाँ लोग निरंकुश हो जाते हैं’ (नीतिवचन 29:18)। शैतान अलग-अलग तरीकों और विभिन्न माध्यमों से बड़ी चतुराई के साथ काम करेगा, ताकि परमेश्वर के बचे हुए लोगों का सच्ची गवाही पर से विश्वास डगमगा जाए। वह लोगों को गुमराह करने के लिए झूठे दर्शन प्रस्तुत करेगा और झूठ को सच्चाई के साथ मिला देगा। इस प्रकार वह लोगों के मन में ऐसी घृणा उत्पन्न करेगा कि वे दर्शन के नाम से जुड़ी हर बात को एक प्रकार का कट्टरपंथ समझने लगेंगे; लेकिन ईमानदार लोग झूठे और सच्चे दर्शनों की तुलना करके उनमें अंतर पहचान सकेंगे।”

ई जी व्हाइट (चयनित सन्देश, पुस्तक 2, पृष्ठ 78)

परिशिष्ट: एलेन जी. व्हाइट को एक भविष्यद्वक्ता के रूप में स्वीकार किया गया

एलेन जी. व्हाइट को एक सच्ची भविष्यद्वक्ता के रूप में स्वीकार करने से पहले, एडवेंटिस्ट लोगों ने उनके व्यक्तित्व और उनके संदेश की तुलना बाइबल में दिए गए उन मानदंडों से की, जिनके द्वारा सच्चे भविष्यद्वक्ताओं की पहचान की जा सकती है।

अलौकिक घटनाएँ	अपने दर्शनों के दौरान, एलेन ने कई अलौकिक घटनाएँ प्रदर्शित कीं, जैसे साँस न लेना या सामान्य से अधिक शारीरिक शक्ति होना (एक हाथ से परिवार की भारी बाइबल को कई घंटों तक ऊपर उठाए रखना)।
बाइबल के साथ सामंजस्य	उनकी लेखनी में हमें ऐसी कोई बात नहीं मिलती जो बाइबल के संदेश का खंडन करती हो। वह स्वयं हमेशा बाइबल के अध्ययन के लिए प्रोत्साहित करती थीं और कहती थीं कि उनकी लेखनी को बाइबल की रोशनी में परखा जाए।
मसीह की महिमा करना	उनका मुख्य संदेश आरंभ से ही एक ही था: मसीह और केवल मसीह।
सकारात्मक प्रभाव	जिन लोगों ने उन्हें व्यक्तिगत रूप से जाना और हममें से जिन्होंने उनकी लेखनी पढ़ी है, वे सभी इस बात की पुष्टि कर सकते हैं कि उनके प्रभाव से हमारे मसीही जीवन के अनुभव पर सकारात्मक असर पड़ा है।
भविष्यवाणियों का पूरा होना	उदाहरण के लिए, अमेरिकी गृहयुद्ध का लंबे समय तक जारी रहना (जिसकी भविष्यवाणी 1861 में की गई थी); या वह आग जिसने रिव्यू एंड हेराल्ड के भवनों को नष्ट कर दिया (जिसकी भविष्यवाणी 1901 में की गई थी और जो 1902 में पूरी हुई)।